International Journal of Applied Research 2018; 4(3): 333-335

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(3): 333-335
www.allresearchjournal.com
Received: 16-01-2018
Accepted: 13-02-2018

रौशन कुमार यादव
नेट/जे०आर०एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट शोधार्थी विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
रौशन कुमार यादव
नेट/जे०आर०एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट शोधार्थी विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

राजकमलक उपन्यासक उत्कृष्टता

रौशन कुमार यादव

सारांशः
राजकमलक उपन्यास सुगठित कथानकसँ युक्त मैथिली उपन्यास साहित्यक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थिक। मैथिली साहित्यमे हिनक दू गोट उपन्यास 'आदि कथा' आ 'आन्दोलन' उपलब्ध अछि। एकटा तेसरो उपन्यास 'पाथर–फूल' क नाम अबैत अछि, मुदा ई अप्राप्त अछि। कहल जाइत अछि जे प्रकाशन तऽ भेल छल, मुदा कथित अश्लीलताक कारणेँ एकरा प्रसारित नहि होमय देल गेल।
राजकमलक उपलब्ध दुनू उपन्यास 'आदिकथा' आओर आन्दोलन मे, आन्दोलन उपन्यासकेँ राजकमल स्वयं उपन्यास नहि कहि कऽ ओकरा मिथिला मैथिली लेल कयल गेल राजनीतिक पर्यवस्थितिमे लिखल गेल प्रथम वृत्तानन्तक कथा कहलनि अछि। जून 1958 मे 'आन्दोलन' आ दिसम्बर 1958 मे 'आदिकथा' उपन्यास प्रकाशमे आयल। ई समय मैथिली आन्दोलनक प्रारम्भिक अवस्था आओर ओहि आन्दोलनकेँ तेज करबाक हेतु प्रयत्नशील भाषाप्रेमीक त्यागक समय छल तऽ दोसर दिस सामन्तवादी वंशक रूढ़िवादिताक समय सेहो छल। एहि दुनू उपन्यासमे राजकमल जनमानसक ओही समयक चित्रके चित्रित कयलनि अछि। एहिमे ओ सफल सेहो भेलाह अछि।

शब्द कुंजीः राजकमलक उपन्यासक, सुगठित कथानकस, मैथिली उपन्यास और आन्दोलन उपन्यासके

प्रस्तावना
राजकमलक उपन्यास 'आन्दोलन' जीबा लेल एकटा ठोस धरातलकेँ तकैत युवकक मार्मिक चित्र अछि। जीवनक ओहन सत्यसँ जूझयवला युवकक संख्या मिथिलांचलमे कम नहि अछि। आन्दोलनक कमल बाबू अपन बच्चा, अपन पत्नी सहित पूरा परिवारक प्रतिपाल हेतु महानगर अर्थात् कलकत्ताक गलीमे घूमि–घूमिकऽ अन्न आ वस्त्र लेल काज आ आश्रय तकैत छथि। भूख, यौन, पिपासा आ सुरक्षा, ई तीनू एहि उपन्यासमे उमड़िकऽ आयल अछि। एहि तीनू लेल मानव सभ किछु करैत अछि। मनुक्खक चेतन आ अचेतन अवस्थाक परिभाषा एहि उपन्यासमे फराक–फराक ढंगसँ कयल गेल अछि। अपन यौन पिपासाक अनिवार्यता स्वीकारि कमल बाबू एकटा कलंकित बाटपर घुमैत छथि आ हुनका अपन दुर्बल पक्षक आभास होइत छनि। तखन नीलू अपन सर्वस्व समर्पित कऽ दैत अछि। आन्दोलनक एकटा दोसर पक्ष मिथिला–मैथिली आन्दोलनक पाछाँ भऽ रहल राजनीतिके नाँङट करब सेहो अछि। मिथिलामे एहन देखला गेल अछि जे लोक मैथिली भाषा आ मिथिला राज्यक नामपर विभिन्न प्रकारक संगठनक नामकरण कऽ ओहिसँ जीवन–यापन चलेबाक फिकिरमे लागल रहैत अछि जाहिसँ मिथिला–मैथिली आन्दोलनकेँ कलंकित करबाक चेष्टा कयल जाइत अछि। आन्दोलन उपन्यासमे एकर पर्दाफास कयल गेल अछि।
हिनक दोसर उपन्यास 'आदिकथा' राजकमलक अपनहि शब्दमे ''एकटा अपूर्ण ट्रेजेडी अछि।'' [1] वस्तुतः समाजिक यथार्थो तऽ इएह अछि जे आदमी प्रेम करैत अछि, मुदा प्रेमसँ उत्पन्न उत्साह, अपन पुरान संस्कार आ पुरान परम्परासँ कमजोर तऽ रहिते अछि। मुदा एहि प्रेमक कारणेँ ओ परम्पराकेँ तोड़ि नहि पाबैत अछि। 'आदिकथा'क नायिका सोना मामी अर्थात् सुशीला आ नायक देवकान्तक आत्मिक आ सहज प्रेम एहि पारम्परिक जालके नहि तोड़ि सकल। ई समाजक अपूर्ण ट्रेजेडी कहबैत अछि।
आन्दोलन आ आदिकथाक नायक–नायिकाक तुलना कयल जाय तऽ आन्दोलनक नीलू 'आदिकथा'क सुशीलासँ बेसी बोल्ड लगैत अछि। ओ अपन इच्छा–आकांक्षाक पूर्ति हेतु विद्रोह करबाक क्षमता रखैत अछि। ओ अपन भूखक तृप्ति हेतु एकटा असफल प्रयास करैत अछि। नीलू किशोरावस्थामे अपन देह, अपन वासनाक माँगकेँ पूरा करबाक हेतु परम्पराक जालकेँ फाड़ि कऽ बाहर अबैत अछि, मुदा सुशीला स्वभावसँ उग्र होइतो, सुन्नर होइतो, धन–सम्पत्तिक अछैतो अपन देह आ अपन इच्छाक उपेक्षा करैत अछि, ओकर दमित वासना कुण्ठित होइत रहैत अछि। संस्कृति, रूढ़िवादिता आ परम्पराक जालमे जकड़ल सुशीला अपने टूटि सकैत अछि, मुदा अपनाकेँ जोड़ऽवला प्रेम लेल

परम्पराकेँ नहि तोड़ि सकैत अछि। ठीक एकर उनटा एहि दुनू उपन्यासक पुरुष पात्र अछि। 'आन्दोलन'क कमलबाबू। यौन पिपासा लेल अपन सभ सीमाकेँ नाँघि अपना घरमे निर्वस्त्र भेलि निलूकेँ, समर्पित भेलि निलूकेँ वेद–उपनिषदक ज्ञान दऽकऽ ओकरा शान्त कऽ दैत अछि। ओतहि 'आदिकथा'क देवकान्त अपन मामीक संग प्रेमक जालमे फाँसि सभ परम्परा आ सम्बन्ध तोड़बा लेल व्याकुल रहैत अछि।

''आदिकथामे घृणित, गलित, सामन्ती व्यवस्थाक अत्याचार आ ओकर कुसंस्कार इत्यादिपर करगर चोट सेहो कयल गेल अछि।'' [2]

राजकमल चौधरीक उपन्यास सभमे कथानकक जाहि स्वरूपकेँ अमर्यादित कहल जाइत अछि, तकरा वस्तुतः राजकमल एकटा विडम्बना, एकटा घृणित विचारक रूपमे प्रस्तुत कयलनि अछि। आदर्श आ मर्यादाक पाथरक तरमे दबल मनोभाव कोन तरहेँ व्यथित होइत अछि, मनुष्यक इच्छा–आकांक्षा कोना थकूचल जाइत अछि, तकर एलबम थिक 'आदिकथा' उपन्यास। ई सुशीला आ देवकान्तक पत्राचारमे देखल जा सकैत अछि। मामी सुशीला भागिन देवकान्तकेँ पत्र दैत कहैत छथि ''अहाँ कठोर छी, निष्ठुर छी, ई गप्प अहाँकेँ देखितहि हम बुझि गेल छलौ।'' [3]

देवकान्त पत्रक उत्तर नहि दै छथि। विचारै छथि जे मामीकेँ पत्र लिखब, प्रेमक गप्प लिखब तऽ पाप अछि। किछु दिनक उपरान्त पुनः पत्र पहुँचै छनि 'हमही नहि ओ सेहो अहाँक चर्चा करैत रहैत छथि। आहाँ हमरा पत्र नहि दिय, हुनको तऽ लिखल करिअउन। अहाँ दुस्साहसी लोक छी, कखन अपन प्रानसँ कोन खेल कय लेब, तकर भय लागल रहय। जँ हमरा सभक प्रति एक्को रती सिनेह अहाँक हृदयमे हुअए तऽ पत्र देल करू।'

एहि पत्रक जवाबमे देवकान्त लिखैत छथि ''हमरा खाली एतबे नहि सुझै अछि जे पत्रमे लिखल की जाय। उचित इएह जे हृदयक व्यथा सहैत रही, प्रकट नहि कऽ सकी। से कोन लाभ।'' [4]

सुशीलाक पत्रमे एहि तरहक उलहन, कठोर संज्ञाक प्रयोग, आत्मीयताक चरम सीमाक गबाही थीक। आ देवकान्तकेँ प्रेम निवेदन प्रकट करबामे होमऽवला पापक डर, एहि डरसँ अथवा अगाध आदर्शक प्रमक समुद्रमे भसिआइत भावनाक स्वर सभ पत्रमे लिखल गेल अभिव्यक्तिक अभाव अपना समाजक कटु सत्य थिक।

समग्रतामे देखने स्पष्ट होइछ जे 'आदिकथा' मैथिली उपन्यासक विकास पथमे बड़ पैग योगदान अछि। अनेक शताब्दी अनेक वर्ष, अनेक मास, अनेक दिन बीति गेल, पीढ़ी–दर पीढ़ी अनेक परिवर्तन भेल, मुदा एखन धरि आडम्बर युक्त आदर्श, जकरा वस्तुतः रूढ़ि कहल जाइत छैक, ताहिसँ हमरालोकनि मुक्त नहि छी। इएह कारण थिक जे 'आदिकथा'केँ सुखान्त नहि कयल गेल जे स्वयं राजकमलो स्वीकारने छथि ''समाजक बदलैत धार्मिक, नैतिक मान्यता आदिक एहि संक्रमणक कालमे 'सुखान्त' नहि बनि सकल, मात्र एक अपूर्ण 'दुखान्त' रहि गेल। इएह समकालीन यथार्थ थिक। लोक प्रेम करइय, प्रेम–पत्रक लेल बेकल रहैय, मुदा संस्कारक ससरफानी तोड़ि नहि पबइए। इएह परम्परासँ चलि आबि रहल कथा थिक 'आदिकथा' थीक।'' [5]

'मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास' लिखबा काल डा० अमरेश पाठक 'आन्दोलन' उपन्यासक चर्चा नहि कऽ सकलाह अछि। 'आन्दोलन' मैथिली साहित्यक प्रथम राजनीतिक उपन्यास थिक। ओना ''राजकमल एकरा प्रथम राजनीतिक उपन्यास अथवा राजनीतिक पर्यवस्थितिमे लिखल गेल प्रथम वृतान्तक उपन्यास कहिकऽ उपन्यासक सम्पूर्ण नाम देब अनुकूल नहि बुझलनि,'' [6] मुदा महानगरीय परिवेशमे जीबैत मैथिली प्रवासी मण्डलीक जीवनक विविध कारणाश्रित घटनाक्रमकेँ क्रमबद्ध आ कलात्मक ढंगसँ सजयबाक कौशल, समयानुकूल परिस्थितिक अनुकूल पात्रक अवधारणा, प्रासंगिक कथावस्तुक समावेश, यथार्थसँ उद्बोधित उपन्यासकारक सुगठित कथानकक नियोजन एहि उएपन्यासकेँ एकटा सम्पन्न उपन्यासक संज्ञा देबामे कोनोटा कसरि नहि शेष रखैत अछि।

मनुष्यक जीवनमे अभावेटा एकटा समरूा नहि अछि। निर्मलाक चित्रण एहि बातक साक्षी अछि। यौन पिपासाक पूर्ति लेल विवाहेटासँ निश्चिन्त नहि भेल जा सकैत अछि। अन्यथा निर्मलाक सन बियाहलि कन्या, विधुर बापक कमाइकेर एकमात्र मलिकाइनि निर्मलाक ई चरित्र किएक होइतनि।

उपन्यासकार राजकमलक प्रसंग कहल जाइत अछि जे ओ अपन उपन्यास सभमे बहुत सफल नहि अछि। उपन्यासकारक रूपमे ओ कम संयमित आ व्यवस्थित अछि। हिनक उपन्यासक एक–एकटा टुकरीकेँ जँ फराक–फराक बाँटि देल जाय तऽ ओ अपनामे एकटा पूर्ण सफल आ श्रेष्ठ कथा होयत, मुदा घटनाचक्रक क्रमबद्ध नियोजन करबामे माहिर राजकमल मानव जीवनक प्रवृत्तिमूलक समरूाकेँ भाषा आन्दोलनक मूल समस्याक संग जोड़ि कऽ अत्यन्त सफलतापूर्वक एकसूत्रता स्थापित कयनेछथि। आन्दोलन उपन्यासक संबंधमे डा० दुर्गानाथ झा श्रीश कहैत छथि– ''एहि मध्य ओ कलकत्तामे चलि रहल मिथिला, मैथिली ओ मैथिली–सम्बन्धी आन्दोलन ओ तकर वस्तुस्थितिक बड़ सजीव चित्र अंकित कयने छथि, मुदा संग–संग लेखकक समाजिक विषमताक प्रति विक्षोभ असंतोष ओ कुण्ठा सेहो बड़ सफलताक संग अभिव्यक्ति भेल अछि। 'आन्दोलन'मे मूल कथाक संग–संग मानव जीवनक क्षुधा, आत्मरक्षा एवं यौन–पिपासाक चित्रण कऽ लेखक मैथिली उपन्यासक क्षेत्र मे नवीनताक संचार कयने छथि।'' [7]

यथार्थः 'आन्दोलन', मैथिली उपन्यासक क्षेत्रमे एकटा नव आरम्भ थिक। ई आत्मकथात्मक शैलीमे लिखल गेल अछि। आत्मकथाक शैलीक उपन्यासमे प्रायः विद्वानलोकनि आत्मसंकोचक प्रवृत्तक भऽ जायब स्वभाविक मानैत छथि। एहि उपन्यासमे एहन दोष नहि आयल अछि। ई लेखकक उत्कृष्ट कौशलक प्रतिफल थिक।

उपन्यासक मूलकथा महानगरी परिवेशक प्रवासी मैथिल द्वारा चलाओल गेल भाषा आन्दोलन रहितो ई एकटा मिश्रित कथानकसँ युक्त उपन्यास थिक। मानव जीवनक तीनटा प्रवृत्ति भूख, आत्मरक्षा एवं यौन पिपासाकेँ केवल प्रासंगिक कथा वस्तुक विषय बनाकऽ नहि छोड़ि देल गेल अछि। विविध कथाक टुकड़ीसँ युक्त उपन्यास रहितो एकर कथान सुगठित आ विश्वसनीयतासँ युक्त अछि। एहि उपन्यासमे राजकमल विभिन्न रीतिसँ कथानककेँ वास्तविकताक लग अनलनि अछि। रचनाकालक दृष्टिकोणसँ 'आन्दोलन' उपन्यास 'आदिकथा'सँ पूर्वक थिक, मुदा पात्र चयनक दृष्टिकोणसँ 'आन्दोलन' बेसी प्रगतिशील आ बेसी आधुनिक अछि।

निष्कर्षः

'आदिकथा'क कथानक सुगठित, सुनियोजित, सुव्यवस्थित आ सुवर्णित अछि। कथा–सूत्रक विस्तार हेतु ठाम–ठाम प्रासंगिक कथाक नियोजन, पात्रक अवधारणा, उत्तम रूपसँ कयल गेल अछि। वृद्धावस्थाक युवा पत्नीक प्रत्येक वैध–अवैध अभिक्रियाक प्रतिकार नहि करब अनिरुद्ध बाबूक विवशता थीक आ कुलानन्दक तमसायब सेहो अनुकूल अछि। महानन्दक गर्म खूनक विद्रोह आ पुरान परम्पराक परिष्कारक हेतु आग्रह समाजजिक प्रगतिशीलता ओ युगीन यथार्थक परिचयसँ युक्त अछि। ई उपकथा गंगामे डुबैत दम्पतीकेँ देवकान्त द्वारा बचयबाक प्रासंगिक घटनाक रूपमे आयल अछि। एहि समस्त वर्णनसँ उपन्यासकार उपन्यासक कथानकमे स्वभाविकता आ कथा–विस्तार अनबाक सफल प्रयास कयलनि अछि। 'आन्दोलन' उपन्यासमे बेसी अपन रिपोर्ताज आ ओहिसँ आगाँ भऽ आहुति मँगैत एकटा उद्बोधन थिक। तथापि 'आन्दोलन'मे किछु वस्तु एहन छैक जे ओकरा रिपोर्ताजसँ उठाकऽ महान उपन्यास बना दैत छैक। कलकताक अन्तरंग जीवन, ओकर वेश्या ओकर भीड़ ओहिठाम लोकक जीवनमे सन्हिआयल एकान्त निर्वासनक दण्ड आदि बड़ मुखर अछि। ताहूसँ बेसी मुखर अछि

मैथिलीक तथाकथित आन्दोलनमे अपनाके ँ बलिदानी घोषित कयनिहार लोकक राग–द्वेष, वासना आ नपुंसकता।

संदर्भ–सूचीः

1. कारखाना, रमेश नीलकमलः तारानन्द, भाग–2, संजय प्रकाशन, रामपुरा, पृ०–27
2. ओतहि, पृ०–28
3. आदिकथा, राजकमल चौधरी, मैथिली प्रकाशन, 1958, पृ०–51
4. ओतहि, पृ०–05
5. ओतहि, पृ०–05
6. कृत राजकमलक, आनन्द मिश्र, मोहन भारद्वाज, मैथिली अकादमी, पटना, 1982, पृ०–167
7. मैथिली साहित्यक इतिहास, दुर्गानाथ झा श्रीश, भारती पुस्तक केन्द्र, 1991, पृ०–153